4

बच्चों की रचनात्मकता को दिशा देती भित्ति पत्रिका

प्रमोद दीक्षित 'मलय'*

बच्चे अपने संपर्क में आने वाली हर घटना, वस्तु, दृश्य, व्यक्ति, मौसम, जल, जीवन और माटी से स्वयं को सहजता से न केवल जोड़ लेते हैं, बल्कि सीखने की प्रक्रिया को गतिशील भी करते हैं। यह सीखना उनके अनुभवों को समृद्ध करते हुए ज्ञान का निर्माण करता है। हर बच्चा अपने अनुभव को प्रकट करना चाहता है और इस प्रकटीकरण के लिए 'दीवार पत्रिका' उन्हें बिल्कुल उचित माध्यम और मंच प्रदान करती है। 'दीवार पत्रिका' वास्तव में बच्चों का अपना मंच है जहाँ उनके भावों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है और परस्पर सीखने-सिखाने के अनंत अवसर भी। वहाँ वे बिना बाहरी हस्तक्षेप और दबाव के समान धरातल पर साझी समझ के साथ भाषाई कौशलों का विकास करते हैं। वह सामूहिकता, नेतृत्व, संवेदनशीलता, कल्पना, अवलोकन, सामग्री चयन, लोकतांत्रिकता आदि मानवीय मूल्यों के रोपण एवं पल्लवन की उर्वर आधार भूमि भी है। प्रस्तुत आलेख में 'दीवार पत्रिका' की रचना प्रक्रिया, सामग्री चयन के क्षेत्रों, बच्चों के भाषागत विकास में उसकी भूमिका, चुनौतियों और समाधान के रास्तों तथा लेखन की विविध विधा एवं शैलियों से बच्चों के परिचय एवं प्रयोग पर चर्चा की गई है।

ब्लॉक संसाधन केंद्र (बी.आर.सी.) में सह-समन्वयक होने के नाते प्रायः विद्यालयों में अनुश्रवण एवं अनुसमर्थन के लिए जाना होता ही है। शिक्षकों और बच्चों से न केवल मुलाकात होती है, बल्कि विभिन्न मुद्दों पर बातचीत भी होती है। कक्षा में बातचीत के दौरान यह महसूस हुआ कि बच्चे सक्रिय सहभागिता नहीं निभाते। समुचित उत्तर नहीं दे पाते। एक प्रकार के संकोच भाव में दबे सिर झुकाए अनमने-से बैठे बस सुनते रहते हैं। हालाँकि, उनका यह सुनना भी भाषायी कौशल की दृष्टि से 'सुनना' नहीं कहा जा सकता। ऐसा क्यों होता है? कारणों की तह में जाएँ तो कुछ महत्वपूर्ण तथ्य उभरते हैं। यथा, बच्चों के साथ कभी खुलकर संवाद के मौके नहीं दिए गए। उनके मन की बातों, अर्जित अनुभवों को कक्षा में प्रकट होने के मौखिक और लिखित सहज अवसर नहीं खोजे-बनाए गए हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 की अपेक्षा है कि, 'रचनात्मक संदर्भ में, सीखना ज्ञान के निर्माण की एक प्रक्रिया है। विद्यार्थी सक्रिय रूप से पूर्व प्रचलित विचारों से उपलब्ध सामग्री,गतिविधियों

**सह-समन्वयक* (हिंदी), ब्लॉक संसाधन केंद्र नरैनी, बाँदा उत्तर प्रदेश

के आधार पर अपने लिए ज्ञान की रचना करते हैं (अर्जित अनुभव)।' हर बच्चा सीखना चाहता है और उसके सीखने के कई तरीके होते हैं। बच्चे अपने परिवार, पड़ोस और परिवेश में बहुत कुछ सीखते हैं और सोचते भी हैं। वह अपने अनुभव बाँटना भी चाहते हैं, लेकिन विद्यालय उनके लिए अवसर नहीं जुटाता। विद्यालय में तो शिक्षकों का पूरा ज़ोर पुस्तकें पढ़ाने और पाठ्यक्रम को समय से पूरा कराने में ही रहता है। फलतः शिक्षक ज्ञान के एकमात्र स्रोत के रूप में उभर आता है और कक्षा या विद्यालय में उसकी सत्ता स्थापित हो जाती है, जहाँ बच्चों के करने-कहने के लिए न तो जगह होती है और न ही स्वतंत्र सृजनात्मक माहौल। बच्चे परंपरागत तरीके से प्रश्नों के उत्तर रटते हैं और उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे परीक्षा में रटी हुई सामग्री को ज्यों का त्यों लिख दें। ज्ञान निर्माण में उनकी सक्रिय भूमिका नहीं होती। तो फिर प्रश्न उठता है कि बच्चों में रचनात्मकता आए तो आए कैसे? इस प्रश्न के उत्तर में कई शैक्षिक और सह-शैक्षिक गतिविधियों के नाम लिए जा सकते हैं; जैसे — बाल सभा, बाल शोध मेला, खेलकूद, गाँव भ्रमण, वन विहार कार्यक्रम, वार्षिकोत्सव एवं भित्ति पत्रिका का प्रकाशन।

बच्चों की रचनात्मकता के विकास के लिए ज़रूरी है कि विद्यालय उन्हें उनके अर्जित अनुभवों को प्रकट करने के सुगम अवसर उपलब्ध कराए। इस संबंध में भित्ति पत्रिका एक महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में उभरी है। भित्ति पत्रिका को उत्तराखंड में एक अभियान के रूप में गति दे रहे *शैक्षिक दखल* के संपादक शिक्षक महेश पुनेठा कहते हैं, "भित्ति पत्रिका भाषायी दक्षता और रचनात्मकता के विकास का माध्यम ही नहीं है, बल्कि अपने आप में पूरी पाठ्यचर्या है।" अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए वे कहते हैं, "भित्ति पत्रिका निर्माण की प्रक्रिया से गुज़रना ज्ञान सृजन और मूल्य निर्माण की प्रक्रिया से गुज़रना है। इस प्रक्रिया से जुड़कर बच्चे एक साथ सभी विषयों की दक्षता और कौशलों को प्राप्त करते हैं। यह सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का एक बेहतरीन टूल भी है। निश्चित रूप से भित्ति पत्रिका विद्यालय को एक ऐसा रचना स्थल बनाने में सहायक है जहाँ बच्चे भयमुक्त और बाल मैत्रीपूर्ण परिवेश में खुशी-खुशी जीवन का सबक सीख सकते हैं।"

क्या है भित्ति पत्रिका

किसी चार्ट पर साहित्य की विविध विधाओं की बच्चों द्वारा रचित मौलिक रचनाओं, चित्रों एवं गतिविधियों को दीवार पर चिपका एवं सजा-सँवार कर प्रस्तुत करना ही भित्ति पत्रिका है। किसी भित्ति पर टँगी होने के कारण ही इसे भित्ति पत्रिका (दीवार पत्रिका) कहते हैं। इसे 'वॉल मैगज़ीन' और 'वॉल अखबार' के नाम से भी जाना जाता है। वास्तव में भित्ति पत्रिका किसी विद्यालय का एक ऐसा भौतिक संसाधन है जिसे रोचक, अर्थपूर्ण एवं गतिविधिपरक सामग्री से सज्जित कर प्रदर्शित किया जाता है जिसमें बच्चों की अभिव्यक्ति के लिए असीम संभावना और अवसर होते हैं। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* में सुझाव दिए गए हैं कि विद्यालय रटंत प्रणाली की बजाय बच्चों को मौलिक कल्पना एवं चिंतन-मनन करने के अवसर देते हुए स्कूली ज्ञान को बच्चों के स्थानीय परिवेश से उपजे ज्ञान से जोड़ें जहाँ बच्चे

सभी विषयों में परस्पर सह-संबंध स्थापित करते हुए सीखने-सिखाने के नये सुगम अवसर तलाश सकें। भित्ति पत्रिका इस कसौटी पर खरी उतरती है। विद्यालयों में बच्चों की भाषायी दक्षता और रचनात्मक कौशलों के विकास में भित्ति पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सामान्यत: कविता, कहानी, चुटकुले, कुछ चित्र और विद्यालय की कुछ गतिविधियों के समाचार जैसी बच्चों की रचनाओं को एकत्र कर किसी चार्ट पेपर या नए/पुराने कैलेण्डर में चिपका कर और थोड़ी-सी साज-सज्जा के साथ प्रकाशित करना ही भित्ति पत्रिका है। ऊपरी हिस्से में स्केच पेन से मोटे-बड़े अक्षरों में एक शीर्षक लिखकर सुतली आदि से बाँध कर किसी ऐसी भित्ति में उचित ऊँचाई पर टाँग दिया जाता है जहाँ बच्चे आसानी से उसे पढ़ सकें। चार्ट के किनारों को लेमिनेटेड करने और ऊपर-नीचे बाँस की खपच्ची या कोई पतली टहनी बाँध देने से पत्रिका को सुरक्षित रूप से टाँगना आसान हो जाता है। यह बच्चों की अभिव्यक्ति का सस्ता और सर्व सुलभ साधन है। एक बार समझ बन जाने पर इसे बेहतर बनाने के अन्य प्रयोग भी किए जा सकते हैं।

भित्ति पत्रिका कैसे बनाएँ

भित्ति पत्रिका बहुत कम लागत पर तैयार की जा सकने वाली एक सरल और रुचिपूर्ण गतिविधि है जिसे बच्चे डेढ़-दो घंटे में बना सकते हैं। पत्रिका बनाने के लिए एक या दो चार्ट, रंगीन पेंसिलें, गोंद, कैंची, पटरी, सुतली, टेप आदि की ज़रूरत पड़ती है। चार्ट के अभाव में पुराने कैलेण्डर या अखबारों का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। एक चार्ट लें और उसके ऊपर की ओर दो इंच चौड़ा अन्य चार्ट से काटा गया टुकड़ा चिपका दें। सूखने पर उस हिस्से पर पत्रिका का नाम और अन्य जानकारियाँ जैसे वर्ष, पत्रिका के अंक की संख्या, प्रकाशन तिथि, विद्यालय का नाम आदि स्केच पेन या मार्कर से स्पष्ट और स्वच्छ तरीके से अंकित कर दें, इसे हेडर कहते हैं। बच्चों से स्वरचित रचनाएँ मँगाकर एकत्रित कर लें और उनमें से उपयोगी रचनाओं को चुनकर पूरे चार्ट पर हेडर के नीचे करीने से चिपका दी जाती हैं। रंगीन पेंसिल से कागज़ों के चारों ओर बॉर्डर बना दें। चार्ट के चारों ओर बॉर्डर बनाना भी ठीक रहेगा। नीचे की ओर संपादकीय टीम का नाम भी लिख लें। यदि रचनाएँ अधिक आ गई हैं तो एक दूसरा चार्ट लेकर पहले चार्ट के नीचे चिपका कर आकार बड़ा कर लें। अब चार्ट के ऊपरी हिस्से में दो छेद कर आईलेट लगा सुतली फँसा कर तैयार पत्रिका को किसी भित्ति में बच्चों की ऊँचाई अनुसार टाँग दें, जहाँ बच्चे उसे आसानी से पढ़ सकें। तैयार पत्रिका को प्रार्थना सत्र या बाल सभा के दौरान प्रदर्शित करने से बच्चों में उत्साह और कुछ नया रचने-करने का भाव जागृत होता है। गाँव के सार्वजनिक स्थान या किसी चौपाल पर भी भित्ति पत्रिका को कुछ समय के लिए लगाया जा सकता है, ताकि ग्रामवासी बच्चों की रचनाधर्मिता से परिचित हो सकें। यदि चार्ट मुड़ या हवा में उड़ रहा हो तो बाँस की एक-एक खपच्ची या दफ्ती का टुकड़ा चार्ट के ऊपर-नीचे पीछे की ओर धागे से टाँक दें। बच्चों में भित्ति पत्रिका की समझ विकसित करने के लिए उन्हें कोई बाल पत्रिका या अखबार पढ़ने को दें और उसके विविध स्तंभों पर बातचीत करें, इस प्रक्रिया से बच्चे

पत्रिका या अखबार के स्वरूप को समग्रता में समझ पाएँगे। शुरू में अखबारों की बालोपयोगी कतरनों को चस्पा करना उचित रहेगा। एक-दो अंक निकालने के बाद बच्चों से उनकी पाठ्यपुस्तक, किसी पत्रिका, अखबार आदि से देखकर लिखी गई सामग्री मँगवाई जाए। इस तरह धीरे-धीरे बच्चों में स्वयं लिखने की भावना जागृत होगी और अपने अनुभवों को कागज़ पर उतारने को प्रेरित होंगे। विद्यालय की सुविधानुसार भित्तिपत्रिका का प्रकाशन साप्ताहिक, पाक्षिक या मासिक किया जा सकता है। निरंतरता बनी रहने से पत्रिका का स्वरूप बेहतर होता जाएगा। बच्चों की रुचि और संख्या के आधार पर किसी विद्यालय में एक से अधिक भित्ति पत्रिकाएँ प्रकाशित की जा सकती हैं।

संपादक मंडल का चयन करना

सुगमकर्ता शिक्षक/शिक्षिका को चाहिए कि सबसे पहले सभी कक्षाओं से कुछ बच्चे जिनकी रुचि इस तरह की गतिविधियों में हो उनके साथ अलग बैठें और भित्ति पत्रिका के संबंध में विस्तृत बातचीत कर एक *डमी* भित्ति पत्रिका तैयार करें। प्रशिक्षण के समय समाचार पत्रों से बच्चों से संबंधित सामग्री की *कटिंग्स* का प्रयोग कर सकते हैं। इसके बाद उन्हीं बच्चों में से एक संपादक मंडल बनाएँ जिसमें संपादक, सह संपादक, कला संपादक, प्रबंध संपादक, समाचार संवाददाता आदि काम के लिए बच्चों को चुनकर दायित्व दे दें। सुगमकर्ता कोई निर्णय न सुनाए, बल्कि बच्चों को निर्णय लेने को प्रेरित करते हुए आज़ादी दें। बच्चों के निर्णय को स्वयं भी उदार मन से स्वीकार करें। संपादक मंडल अपनी पत्रिका का नाम स्वयं या विद्यालय के बच्चों के साथ चर्चा करके चुनें, ऐसा करने से पत्रिका के प्रति बच्चे अपनापन महसूस करेंगे।

पत्रिका में कैसी सामग्री हो

एक भित्ति पत्रिका में कविता, कहानी, गीत, पहेलियाँ, कार्टून, रोचक गतिविधियाँ, चित्र, स्कूल और गाँव के समाचार, लेख, साक्षात्कार, चुटकुले, संपादकीय, पाठकों के पत्र आदि विविध सामग्री होने से पत्रिका अधिक उपादेय होने के साथ ही एक सुवासित गुलदस्ते का एहसास कराएगी। पत्रिका में स्थानीय इतिहास, भूगोल, जंगल, पर्यावरण, संस्कृति, पर्यटन, पुरातात्विक स्थल एवं शिल्प मेले-उत्सव आदि पर भी सामग्री दी जा सकती है। समय-समय पर विशेषांक भी निकाले जा सकते हैं। जैसे हिंदी भाषा, गणित, सामाजिक विषय, कला, विज्ञान आदि विषयगत विशेषांक। वहीं जड़ी-बूटी, गैर-कृषि एवं स्थानीय उत्पाद, लोकगीत एवं लोकपर्व, बाल शोध मेला आदि सहित अन्य मुद्दों पर भी विशेषांक तैयार किए जा सकते हैं।

भित्ति पत्रिका निर्माण में चुनौतियाँ एवं सावधानी

जब भी कोई नया काम प्रारंभ होता है तो लोग उसे संशय की दृष्टि से देखते हैं और प्रायः विरोध भी करते हैं। भित्ति पत्रिका वैसे बहुत सरल एवं कम लागत पर तैयार होने वाली एक सह-शैक्षिक गतिविधि है पर समझ के अभाव में अपेक्षित सफलता नहीं मिलती और उपहास का पात्र भी बनना पड़ता है। पत्रिका निर्माण में आने वाली कुछ सामान्य चुनौतियाँ इस प्रकार हैं। यथा, सुगमकर्ता शिक्षक को भित्ति पत्रिका की अवधारणा स्पष्ट न होने से वह बच्चों तक सम्यक

जानकारी नहीं पहुँचा पाएगा। इस कारण बच्चे काम में रुचि नहीं लेंगे और पत्रिका एक अनावश्यक थोपा हुआ काम या बोझ बन जाएगी। विद्यालय के अन्य शिक्षकों का सहयोग न करना और उपहास करना, बच्चों की मौलिक रचनाएँ न मिल पाना, धन एवं समय की बर्बादी समझना, इन चुनौतियों से पार पाने के लिए भित्ति पत्रिका पर काम कर रहे शिक्षक के लिए भित्ति पत्रिका की अवधारणा की समझ बिल्कुल स्पष्ट होनी चाहिए। बेहतर होगा कि बच्चों के बीच काम करने से पहले उसने विधिवत प्रशिक्षण ले लिया हो या भित्ति पत्रिका बनाने में कहीं सहभागिता की हो। अन्यथा अधकचरी समझ से बनी भित्ति पत्रिका अपने उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर पाएगी और असमय काल कवलित हो जाएगी। ऐसी स्थिति में पुनः काम प्रारंभ करना कठिन हो जाता है। बच्चों से गलतियाँ होना स्वाभाविक है, ऐसी स्थिति में सुगमकर्ता को धैर्य, विवेक एवं शांति से काम लेना चाहिए। यह हमेशा ध्यान रहे कि भित्ति पत्रिका बनाना हिंदी भाषा की कक्षा नहीं है। हस्तलेख खराब होने, लिखावट को काटने, वर्तनी की अशुद्धियों के लिए बच्चों को डाँटें नहीं। काम करते हुए बच्चे स्वयं एक-दूसरे को उनकी कमियों की ओर संकेत करेंगे और उनका सीखना निर्बाध संभव हो सकेगा।

भित्ति पत्रिका बच्चों की प्रगति का संकेतक

भित्ति पत्रिका बच्चों की रचनात्मकता को बढ़ाने के साथ ही उनकी प्रगति का संकेतक भी होती है। बच्चों को अपने कौशलों को निखारने का अवसर तो मिलता ही है साथ ही वे अपने कार्य की जाँच-परख भी कर लेते हैं। भित्ति पत्रिका का निर्माण करना सही मायनों में लोकतांत्रिक परिवेश में ज्ञान निर्माण करना और उस अर्जित ज्ञान को आगे ले जाना है। इससे लोकतंत्र के प्रभावी स्तंभ 'मीडिया' की समझ भी विकसित होती है। बच्चे सभी काम मिलजुल कर करते हैं, यह बच्चे में सामाजिकता का विकास करता है। बच्चे रचनाओं के चयन में विचार-विमर्श करते हैं तो उनमें मुद्रित सामग्री को पढ़ने, समझने, अवलोकन करने की समझ विकसित होती है। बहुत सारी वस्तुओं में से उपयोगी वस्तुओं के चयन करने का हुनर पैदा होता है। चूँकि, पूरा काम समूह में होता है और परस्पर विचार विनिमय होने से उनमें अपना पक्ष रखने और दूसरों की बात सुनने का कौशल अर्जित होता है। एक टीम के रूप में काम करना आता है और किसी कार्य की सफलता में टीम की भूमिका एवं महत्त्व को समझ पाते हैं। ये सब बातें कक्षा में नहीं सिखायी जा सकतीं क्योंकि बच्चे बहुत सारी चीज़ें देख-सुन और स्वयं करके सीखते हैं। भित्ति पत्रिका का काम करने से बच्चों में चार भाषायी कौशलों, में से दो लिखना एवं पढ़ना, का जहाँ वय एवं कक्षानुसार वांछित स्तर का विकास हो जाता है वहीं अन्य दो कौशल सुनना एवं बोलना में भी पकड़ मज़बूत होती है। संपादन प्रक्रिया में नए शब्दों, वाक्यों, विधाओं, शैली और बनावट से परिचय होता है जो बच्चे की सीखने की गति को तीव्र करता है। नई-नई चीज़ें सीखने के लिए बच्चे न केवल पुस्तकालय जाना प्रारंभ करते हैं, बल्कि पुस्तकों एवं पत्रिकाओं से दोस्ती भी करते हैं। पुस्तकों से यह दोस्ती उनमें पढ़ने की एक संस्कृति विकसित करती है। यह बच्चे की भाषा को तो समृद्ध करता ही है साथ ही उसकी भावाभिव्यक्ति को भी प्रभावी

बनाता है। यह विद्यालयी ज्ञान का परिवेशीय ज्ञान से तारतम्य स्थापित करती है। यह अभिव्यक्ति की आज़ादी का बच्चों का अपना एक मंच है जहाँ सभी के लिए अपने मन की बात कहने के एकसमान अवसर हैं। लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति आस्था, संवैधानिक मूल्यों यथा, समता, स्वतंत्रता, न्याय, मानवीय गरिमा, करुणा, धर्मनिरपेक्ष सामाजिक व्यवहार और प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व के साथ, जीने की कला भी भित्ति पत्रिका में काम करते हुए बच्चे अनायास सीख जाते हैं। जीवन कौशलों एवं मानवीय मूल्यों का विकास स्वतः होता जाता है।

शिक्षकों के साथ काम

प्रयोग के तौर पर 2013 में मैंने अपने कार्यक्षेत्र के अंतर्गत लगभग 15 स्कूलों में भित्ति पत्रिका पर काम शुरू करवाया। उन विद्यालयों से एक-एक शिक्षक/शिक्षिका चुनकर एक दिन का प्रशिक्षण दिया। बड़े समूह में भित्ति पत्रिका पर संवाद हुआ, प्रश्नोत्तर हुए और एक साझी समझ का निर्माण किया। फिर पाँच-पाँच शिक्षकों के छोटे समूह बनाकर भित्ति पत्रिका बनवाई गईं। कार्यशाला से बनी समझ का इस्तेमाल करते हुए उन लोगों ने अपने विद्यालयों में काम शुरू किया। उन सबके लिए यह एक नया काम था, लेकिन बच्चों में भाषायी विकास का सपना संजोये वे इसे करना चाहते थे। हालाँकि, कतिपय कारणों से लगभग आधे स्कूलों में दो-तीन अंक निकलने के बाद पत्रिका का प्रकाशन संभव नहीं हो सका, लेकिन आज 7 विद्यालयों में भित्ति पत्रिका कहीं पाक्षिक तो कहीं मासिक अंक के रूप में नियमित निकल रही है। एक स्कूल में तो दो भित्ति पत्रिकाएँ निकल रही हैं। भित्ति पत्रिका में काम करने वाले बच्चों की रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में छप रही हैं। *चकमक* पुस्तक (मासिक पत्रिका, एकलव्य द्वारा प्रकाशित भोपाल), *भित्ति पत्रिका* और *रचनात्मकता* (लेखक महेश पुनेठा, लेखक मंच प्रकाशन, नयी दिल्ली) में बच्चों के अनुभव छपे हैं। उनमें भाषायी कौशलों का विकास हुआ। भित्ति पत्रिका बच्चों को एक बेहतर नागरिक के रूप में भी विकसित कर रही है जो अपने आसपास में हो रहे परिवर्तनों को गहराई से समझ रहे हैं।

मैं हमेशा से भित्ति पत्रिका को बच्चों में भाषायी दक्षता विकसित करने के एक सहज साधन के रूप में देखता-मानता रहा हूँ। भित्ति पत्रिका को मैंने इस पर काम करने वाले बच्चों में लेखन क्षमता, कल्पना और चिंतन शक्ति, कलात्मक अभिरुचि, सामूहिकता, सामग्री चयन करने के संपादकीय कौशल के विकास के साथ-साथ उनमें एक अच्छे नागरिक के रूप में बढ़ने के अवसर के रूप में देखा है। लेकिन इधर के तीन-चार वर्षों में, जब से मैंने भित्ति पत्रिका पर बच्चों के साथ गंभीरता से काम करना शुरू किया है, इसके एक नए रूप से मैं परिचित हुआ हूँ और वह है भित्ति पत्रिका से होने वाले बदलाव। ये बदलाव बच्चों और विद्यालय के शैक्षिक वातावरण में ही नहीं हैं, अपितु विद्यालय की बाहर की दुनिया में भी हैं।

अब भित्ति पत्रिका केवल कहानी, कविता, चुटकुले के संक्षिप्त कलेवर से बाहर निकल न केवल नई विधाओं की रचनास्थली बनकर उभरी है, बल्कि लोक जीवन के विविध पक्षों को अपने में समेटने-सहेजने को उत्कंठित और उत्साहित भी

दिखी है। चुप्पी की संस्कृति को तोड़ती एवं व्यवस्था में पिसते लोक का स्वर नव आयाम लेकर अब प्रकट होने लगा है। बच्चों के घर-परिवार और उनकी मन की बातें, विद्यालय और गाँव की गतिविधियों के समाचार एवं समस्याएँ, गाँव का अपना इतिहास-भूगोल, नजरी नक्शा, खेती का काम कर रहे किसान-श्रमिक, बुनकर, बाँस से डलिया और मिट्टी से बर्तन बनाने वाले, लुहारगीरी से जुड़े कला दक्ष लोगों के साक्षात्कार आदि के प्रयोग सेभित्ति पत्रिका अन्य बच्चों, शिक्षकों और अभिभावकों का ध्यान अपनी ओर खींच रही है। इस नए रूप को देख-समझकर बच्चों में उत्साह हिलोरे लेने लगा है और उन्हें नए अंक की बेसब्री से प्रतीक्षा होने लगी है। हमारी भित्ति पत्रिका बच्चों के साथ हँसी-ठिठोली, संवाद करते एवं सवाल खड़े करती आगे बढ़ रही थी कि एक घटना ने हम सबको अंदर तक हिला दिया।

बदलाव की आधार भूमि बनती भित्ति पत्रिका

एक दिन जब मैं स्कूल जा रहा था। गाँव के समीप ही रास्ते में एक रजबहे (छोटी नहर) की पुलिया पर बैठे आठ-दस लोगों के समूह में से दो-तीन लोगों ने एक साथ लगभग चिल्लाते हुए आवाज़ दी, "अरे मास्साब! रुकिए। आपसे कुछ ज़रूरी बात करनी है।" मैं कुछ भी समझ नहीं पा रहा था, क्योंकि इसके पहले गाँव वालों ने कभी भी मुझे इस तरह से रोका-टोका नहीं था। पल भर में ही तमाम अनजाने सवाल मेरे दिमाग में तैर गए। मेरे रुकते ही लगभग सभी लोग बोल पड़े कि आप स्कूल में बच्चों से यह सब क्या करवा रहे हैं? अभी भी मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। मुझे चुपचाप खड़ा देख उनमें से एक वृद्ध बोला, "वा जो आप बच्चों से सोहर, दादरा, गारी, फाग, चैती लिखवा रहे हऊ न, तो या कौन सी पढ़ाई आय। मास्साब! हमरे जमाना मा तौ अस पढ़ाई न होत रहै। हम लरिकन का नीक-भली चार बातैं पढ़ैं खातिर इस्कूल भेजित है सोहर, गारी सिखैं का नाही।"

अब पूरा संदर्भ मेरी आँखों के सामने घूम गया और मैंने उनके साथ पूरा विवरण साझा किया। हुआ यह था कि एक विद्यालय में कक्षा तीन की हिंदी पुस्तक *कलरव* पढ़ाते हुए 'लोकगीत' शीर्षक नाम से एक पाठ मिला। उस पाठ में आठ-दस पंक्तियों में लोकगीत के बारे में चर्चा की गई थी और इस निर्देश और अपेक्षा के साथ पूरा पृष्ठ खाली छोड़ दिया गया था कि बच्चे अपने-अपने क्षेत्र के कोई एक-दो लोकगीत उसमें लिखें। बच्चों से बातचीत में यह बात भी निकली कि शिक्षकों ने न कभी इस पाठ को पढ़ाया और न ही इस पर कोई चर्चा की। उस दिन, दिन भर मैं विचार करता रहा कि यह पाठ क्यों रखा गया होगा। इसके क्या मायने हैं? क्या दूसरी कक्षाओं की हिंदी पुस्तकों में भी ऐसे पाठ होंगे? खोजने पर मैंने सभी कक्षाओं की पुस्तकों में भी इसी प्रकार के लोक संस्कृति को उभारने वाले पाठ पाए। मैं किसी निर्णय पर नहीं पहुँच पा रहा था। मैंने सभी पाठों को एकत्र कर शिक्षकों के स्वप्रेरित नवाचारी समूह 'शैक्षिक संवाद मंच' की एक बैठक में विचार-विमर्श के लिए रखा। विचार-विमर्श से निकली बातों का सार हमारे सामने था कि भौतिकता की चकाचौंध में लोग अपनी ग्राम्य संस्कृति को न केवल भूलते जा रहे हैं, बल्कि उसे दोयम दर्जे का भी मान रहे हैं। बढ़ते शहरीकरण ने गाँवों तक पैर पसार लिए हैं। बाज़ार ने

गाँव के हर घर की चौखट पर दस्तक देकर हर व्यक्ति के हाथ पर लोभ-लालच का 'लॉलीपॉप' थमा दिया है। फलतः लोक में व्याप्त जिन गीत और कथा-कहानियों में लोकजीवन साँस ले रहा था उसे समाज ने धीरे-धीरे बिसरा दिया है। फलतः फूहड़ और द्विअर्थी फ़िल्मी गीतों ने आहिस्ते-आहिस्ते घुसपैठ कर उसकी जगह ले ली और हमें पता भी नहीं चला। तो हो सकता है कि भावी पीढ़ी को लोक संस्कृति से परिचित कराने और अपनी विरासत बचाने के लिए इन पाठों को पुस्तकों में जोड़ा गया हो। और यदि ऐसा है तो हमें इस दिशा में काम करने की ज़रूरत है। साथियों ने सुझाव रखा कि क्यों न जूनियर विद्यालय की भित्ति पत्रिका का अगला अंक लोकगीतों पर ही केंद्रित किया जाए। सभी को यह पसंद आया।

मैं उस विद्यालय गया और बच्चों के साथ इस संबंध में खुलकर पूरी बात की, उनका नजरिया जाना। फिर आपसी निर्णय से भित्ति पत्रिका के उस अंक को 'लोकगीत विशेषांक' के रूप में निकालने की योजना बनी। मैंने यह प्रश्न भी रखा कि हम इन लोकगीतों को लेकर क्यों काम कर रहे हैं? इनकी हमारे जीवन में क्या उपयोगिता हो सकती है? बच्चों ने अपनी-अपनी समझ से विचार रखे। यह भी तय हुआ कि प्रतिदिन के अनुभवों को अपनी-अपनी डायरी में भी दर्ज़ किया जाएगा। गीतों को केवल लिखना भर नहीं है बल्कि उनके गाने की लय, अर्थ और प्रसंग को भी समझना है। अंक पंद्रह दिन बाद निकलने वाला था और इन पंद्रह दिनों में बच्चों ने उन गीतों को न केवल खोजने की कोशिश की, बल्कि उनके महत्त्व को भी गहराई से समझा। मैंने अनुभव किया कि बच्चे अपनी लोक परंपरा से जुड़ रहे हैं। भित्ति पत्रिका का यह अंक उनके लिए चुनौतीपूर्ण और रोचक था। सभी बच्चों के अनुभव इस मायने में लगभग एक जैसे थे कि उनकी बड़ी बहनों, भाभियों और भाइयों को ऐसे लोकगीत नहीं आते। बच्चों ने उन गीतों को अपनी दादियों-नानियों से सुना-सीखा-लिखा। जब भित्ति पत्रिका को अंतिम रूप देने की बारी आयी तो हम सब साथ बैठे। मैंने उनके अनुभव जानने की कोशिश की। उनके अनुभवों में इन गीतों के संरक्षण की छटपटाहट थी और आँखों में लोकस्वर की पहचान का सपना भी। केशकली ने कहा कि 'मैंने ये गीत कभी नहीं सीखना चाहा क्योंकि मैं इन्हें पिछड़े लोगों के गीत मानती रही हूँ। लेकिन अब मुझे एहसास हो रहा है कि मैं नासमझ थी।' वहीं वंदना, सुमन, भारती एवं आरती का विचार है कि इन गीतों को सीखकर इस धारा को आगे बढ़ाएँगी। मनोज और पुष्पेन्द्र इस काम से उत्साहित होकर कहते हैं कि हमें तो खजाना ही मिल गया है। इन गीतों के प्रति हमारी सोच बदली है और एक नई समझ विकसित हुई है।

भित्ति पत्रिका के उस अंक के लोकार्पण में अभिभावकों को बुलाया गया, उनमें बड़ी संख्या में महिलाएँ भी थीं। बच्चों को ही कार्यक्रम का संयोजन-संचालन करना था। भित्ति पत्रिका के लोकार्पण के बाद बच्चों ने सिलसिलेवार पूरी बातें सामने रखीं, अपने अनुभव साझा किए। यह भी बताया कि यह विषय क्यों चुना गया और उनकी अब क्या समझ बनी है। वहाँ उपस्थित फाग गायक मातादीन ने कहा कि हमारे इन गीतों में माटी की सौंधी खुशबू है। ये केवल बोल भर नहीं हैं इनमें हमारा

अतीत विविध रूपों में सामने आता है। ये हमें समाज में जीना-रहना सिखाते हैं। हमने इनकी कद्र नहीं की और आज ये मर रहे हैं। वहीं मुन्नीलाल ने नयी पीढ़ी द्वारा इन गीतों को सीखने में रुचि न दिखाने पर पीड़ा व्यक्त करते हुए कहा कि हमारी पीढ़ी के बाद ये सब नष्ट हो जाएगा। तब उस पीढ़ी को एहसास होगा कि उन्होंने क्या खोया है। भूरी ने कहा कि 'हमारे घरों में विवाह के बाद बहू के साथ महिलाएँ मिल बैठ कर हँसती-गाती हैं। कई सालों से मैं गाँव में देख रही हूँ कि आने वाली बहुएँ ऐसे अवसरों पर फिल्मी गाने गाती हैं। यह हमें अच्छा लगता था कि हमारी बहुएँ नए चलन के गाने गा रही हैं और हमें गर्व महसूस होता था। लेकिन यह कभी न समझ पायी कि हम अपनी जड़ों से कटे जा रहे हैं। लड़कियाँ भी इन गीतों को नहीं सीखतीं। वे कहतीं है कि ये देहाती गाने हैं, इन्हें गाने में शर्म आती है। जब इन बच्चों ने लिखने के लिए हम लोगों से गीत सुनाने को कहा तो हमें एक बार तो गुस्सा आया। अब हम समझ गए कि हम कितने खोखले हैं। आज सबके सामने मैं कहती हूँ कि अब यह मेरी ज़िम्मेदारी होगी कि मैं बच्चों को ये गीत सिखाने का माहौल बनाऊँगी। इन बच्चों ने जो यह रास्ता दिखाया है। अब हमें सचेत हो जाना चाहिए नहीं तो हम अपनी पहचान खो बैठेंगे।'

भित्ति पत्रिका का यह रूप मेरे लिए किसी आश्चर्य से कम नहीं था क्योंकि हमने कभी सोचा ही नहीं था कि यह बदलावों की आधार भूमि भी बन सकती है। तभी यह निर्णय भी लिया गया कि अब प्रत्येक अंक को गाँव के प्रमुख स्थानों पर कुछ समय के लिए लगाया जायेगा, ताकि गाँव के लोग भी पढ़ सकें। अब गाँव के प्रमुख स्थानों पर हम बच्चों की ज़िम्मेदारी पर भित्ति पत्रिका टाँगते हैं। लोग न केवल पढ़ते हैं बल्कि अपनी प्रतिक्रिया भी देते हैं। गाँव के लोग प्रतीक्षा करते हैं कि नया अंक कब आने वाला है और उसमें क्या क्या होगा। मुझे लगता है इसे भित्ति पत्रिका की एक बड़ी उपलब्धि के तौर पर हम देख सकते हैं।